IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

परिषदीय एवं मिशनरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

पूजा (शोध छात्रा),
शिक्षा संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
डॉ0 एस0 एस0 कुशवाहा (सह आचार्य)
राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)

सारांश

शिक्षा हमारे समाज की नींव है और शिक्षक उस नींव को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में शिक्षा प्रणाली विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में संचालित होती है, जैसे कि परिषदीय और मिशनरी विद्यालय। प्रस्तुत अध्ययन दोनों प्रकार के विद्यालयों में काम करने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को मापने और तुलना करने का प्रयास करता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य परिषदीय एवं मिशनरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया। प्रतिदर्श के रूप में झाँसी जनपद के परिषदीय एवं मिशनरी विद्यालयों से 60 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन याद्रच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। प्रदत्त संग्रहण हेतु डॉ एस0 सक्सेना द्वारा निर्मित "अध्यापक कृत्य संतुष्ट मापनी" का प्रयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया की मिशनरी विद्यालयों के शिक्षक परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अपने कार्य से अधिक संतुष्ट है। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षा प्रशासनिक निकायों और संचालकों को शिक्षकों को सुधार के लिए महत्वपूर्ण निर्देश देने में मदद कर सकते हैं ताकि वे शिक्षा क्षेत्र को और भी उन्नत और सुखमय बना सकें।

मुख्य बिंदु - मिशनरी विद्यालय, परिषदीय विद्यालय, प्राथमिक स्तर, कार्य संतुष्टि

1. परिचय

जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सामाजिक अंतःक्रिया होती है तो वे एक दूसरे की भाषा, विचार और आचरण से प्रभावित होते है। इस प्रभावित होने की प्रक्रिया को सीखना कहते है। और जब यह कार्य कुछ निश्चित उद्देश्यों को सामने रखकर किया जाता है तो उसे शिक्षा कहते है। मनुष्य कुछ शक्तियां लेकर पैदा होता है प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण में उसकी इन शक्तियों का विकास होता है और इसके परिणामस्वरुप ही उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है। इस प्रक्रिया को वास्तविक अर्थ में पूरा करने के लिए शिक्षक की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान देने के साथ साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय सरोकारों से भी परिचित कराता है।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का महत्व प्राथमिक स्तर की शिक्षा से लेकर महाविद्यालय स्तर तक है। प्राथमिक स्तर पर ही शिक्षक को बालक का रूप निर्धारित करना पड़ता है शिक्षक सिर्फ बालक का निर्माण ही नहीं करता बल्कि बालक से उसे अच्छा व्यक्ति व राष्ट्र का अच्छा नागरिक बनाता है। शिक्षक से यह आशा की जाती है कि वह समाज के समक्ष अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करे और यह कार्य तभी संभव है जब शिक्षक अपने कार्य के प्रति संतुष्ट हो। जीवन में प्रशंशा एवं दृढता के लिए कार्य संतुष्टि अत्यंत आवश्यक है असंतुष्ट शिक्षक शिक्षण में रूचि नहीं लेता है जिससे किसी एक का नही वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र की हानि होती है। किसी दूसरे देश की तुलना में भारत में शिक्षा का स्तर शिक्षक की योग्यता पर निर्भर करता है। अगर शिक्षक ही योग्य और संतुष्ट नही हो तो विभिन्न साधनों से कोई लाभ नही हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कार्य का महत्वपूर्ण स्थान है। कार्य संतुष्टि से आशय व्यक्ति की अपने कार्य एवं कार्य से सम्बंधित परिस्थितियों संबंधी विभिन्न अभिवृत्तियों के परिणाम से लिया जाता है। कार्य संतुष्टि एक अप्रेक्षणीय संप्रत्यय है और इसमें संज्ञान, संवेगात्मक भाव तथा व्यवहार पर प्रवृत्तियां सन्निहित होती है इनके कारण कार्य के प्रति व्यक्ति का द्रष्टिकोण अनुकूल या प्रतिकूल हो सकता है। एक शिक्षक अपनी शैक्षिक प्रक्रिया से समाज का पुनः निर्माण कर सकता है यह कार्य वही शिक्षक कर सकता है जो अपने कार्य से संतुष्ट हो। एक शिक्षक की कार्य संतुष्टि से आशय उच्च मानसिक स्वास्थ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण कार्य, दक्षता, उच्च सामाजिक स्थिति आदि से है जब शिक्षक की स्थिति इनमे उच्च होती है तो उसकी कार्य क्षमता बढ़ जाती है। कार्य संतुष्टि एक जटिल संप्रत्यय है जो बहुत हद तक मनोवृत्ति तथा मनोबल से सम्बद्ध और मिलता जुलता है।

प्राथमिक स्तर पर बालक जब विद्यालय जाता है तो उस पर शिक्षक का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यदि शिक्षक अपने पूर्ण उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए बालक को शिक्षा प्रदान करता है तो बालक का सर्वांगीण विकास बहुत अच्छे ढंग से होता है परन्तु यदि शिक्षक अपने कार्य के प्रति संतुष्ट न हो तो शिक्षक बालक की शिक्षा पर उचित ध्यान नही दे पाता व उसकी शिक्षा अवरुद्ध हो जाती है। इसके अलावा शिक्षक बालक की शिक्षा पर इसलिए भी ध्यान नही दे पाता क्योंकि उसे उसके प्रमुख कार्य (शिक्षा) के अलावा और भी कार्य सौप दिए जाते है जिससे उस पर काम का बोझ बढ़ जाता है। जिससे शिक्षक में अपने कार्य के प्रति निराशा उत्पन्न हो जाती है। शिक्षक का असंतुष्टिपूर्ण वेतन और विद्यालय में अत्यधिक समय देना भी उनकी असंतुष्टि का कारण हो सकता हैं। कई लोग तो इस व्यवसाय को मजबूरी में चुनते है। ताकि उन्हें बेरोजगार न रहना पड़े। ऐसे शिक्षक बालकों की शिक्षा पर कोई ध्यान नही देते वे सिर्फ इसे पैसे कमाने का एक जरिया मानते है। इसके अलावा शिक्षकों की कार्य असंतुष्टि के वैयक्तिक व सामाजिक आर्थिक कारण भी हो सकते है। वर्तमान समय में शिक्षकों की कार्य असंतुष्टि का स्तर बढ़ता जा रहा है। ऐसे में बालक की प्राथमिक स्तर की शिक्षा जो जीवन की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा होती है उस पर बहुत बुरा असर पड़ सकता है।

इस प्रकार हम देखते है कि विद्यालय व समाज में शिक्षक का अत्यधिक महत्व है सही मायने में विद्यालय की सार्थकता तथा गतिशीलता शिक्षक के ऊपर आश्रित है इतना ही नहीं शिक्षक तो विद्यालय के सभी कार्यों की धुरी है। ऐसे में आवश्यक है कि शिक्षक अपने कार्य के प्रति संतुष्ट हो। कार्य संतोष प्रत्येक अध्यापक की ऐसी वैयक्तिक व सांवेगिक अनुभूति है, जिसके समस्त आयामों और जटिलताओं को सरलता से नहीं समझा जा सकता है। इस पर निरंतर विभिन्न कारकों का प्रभाव पड़ता रहता है कुछ प्रमुख होते है तो कुछ गौण एवं कुछ भौतिक होते है तथा कुछ अभौतिक या मनोवैज्ञानिक आदि इन विभिन्न कारकों को सुविधा की दृष्टि से तीन मुख्य भागों में विभक्त किया जा सकता है-

व्यक्तिगत कारक - मनुष्य की अनेक व्यक्तिगत विशेषताओं का प्रभाव कार्य संतुष्टि पर पड़ता है लिंग भेद, आयु, स्वास्थ, बुद्धिय आकांक्षा स्तर, आवश्यकता आदि एवं कार्य संतोष में निश्चित सहसंबंध स्थापित किया जा सकता है।

कार्य सम्बंधी कारक - कार्य की दशाएं, कार्य का स्वरुप, पारिश्रमिक, सुरक्षा एवं स्थायित्व, मान्यता अपेक्षाएं एवं कार्य की उचित मात्रा आदि भी अधयापक की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करती है।

प्रबंधक द्वारा नियंत्रित होने वाले कारक - वेतनवृद्धि, पदोन्नति के अवसर, उत्तरदायित्व की भावना तथा अवकाश की सुविधा भी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करती है।

शिक्षा हमारे समाज की नींव है और शिक्षक उस नींव को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में शिक्षा प्रणाली विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में संचालित होती है, जैसे कि परिषदीय और मिशनरी विद्यालय। परिषदीय विद्यालय राज्य शिक्षा परिषद के अधीन होते हैं, जबकि मिशनरी विद्यालय निजी संगठनों या संस्थानों द्वारा संचालित किए जाते हैं। इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है और उनकी कार्य संतुष्टि शिक्षा क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अध्ययन दोनों प्रकार के विद्यालयों में काम करने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को मापने और तुलना करने का प्रयास करता है। इस अध्ययन के तहत, शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के कई पहलुओं का मूल्यांकन किया गया है, जैसे कि उनके कार्य में रुचि, उनके प्रशासनिक समर्थन का स्तर, उनके विद्यालय में सामाजिक संबंध, और उनके वेतन और लाभ के संबंध में। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षा प्रशासनिक निकायों और संचालकों को शिक्षकों को सुधार के लिए महत्वपूर्ण निर्देश देने में मदद कर सकते हैं ताकि वे शिक्षा क्षेत्र को और भी उन्नत और सुखमय बना सकें।

2. सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

1. वर्मा, नितिन कुमार (2010) ने "कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्त एवं अनुदान प्राप्त शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व उसके कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" किया और पाया कि अनुदानित बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अच्छे स्तर की है जबकि स्ववित्त पोषित बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि औसत स्तर की है।
2. अशोक (2019) ने "पुलिस प्रशासन में महिला कार्मिकों की कार्य संतुष्टि" का अध्ययन किया और पाया कि महिला पुलिसकर्मी जिस परिस्थिति में कार्य करती और जिन समस्याओं का सामना करती है उनकी तरफ किसी का ध्यान नही जाता है अध्ययन में पाया गया कि पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को निम्न दशा में रखा जाता है। उनका वेतन कम होने की वजह से जीवन निर्वाह करने में कठिनाई आती है वे कार्य के बोझ में अपने परिवार को उचित समय नही दे पाती है।
3. शाह, करुणा (1981) ने "प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सामाजिक आर्थिक प्रष्ठभूमि एवं उनकी कार्य संतुष्टि" का अध्ययन किया और पाया कि प्राथमिक विद्यालयों की संख्या अधिक होने कारण उनमे कार्य प्राप्त करने की सम्भावना अधिक होती है और अक्सर महिलायें विवाह के बाद शिक्षण कार्य छोड़ देती है और उनके स्थान पर निम्न आयु समूह की महिलाएं प्रविष्ट हो जाती है।
4. विष्णु दत्त, तृप्ति (2013) ने "प्राथमिक विद्यालय में पूर्व नियुक्त एवं नव नियुक्त शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार का अध्ययन" किया और पाया कि प्राथमिक विद्यालय में पूर्व नियुक्त एवं नव नियुक्त शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि प्राप्तांक तथा उनके उनके कक्षा शिक्षण अंतःक्रिया के बीच सार्थक सहसंबंध नही है।
5. पाण्डेय, चंद्रेश (2001) ने "पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सामजिक आर्थिक स्थितियों का उनकी कार्य क्षमता एवं कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन" किया और पाया कि अध्यापकों की सामजिक आर्थिक स्थितियों व उनकी कार्य क्षमता एवं कार्य संतुष्टि में सार्थक सहसंबंध है।
6. शर्मा, प्रतिमा (2020) ने "सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन" किया और पाया कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी व्यावसायिक संतुष्टि में औसत स्तर का सहसंबंध है।
7. बाल, मौसमी (2013) ने "यू.पी. में नियुक्त विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन तथा उनकी कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" किया और पाया कि बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन तथा उनकी कार्य संतुष्टि में सार्थक सहसंबंध है।
8. मिश्रा, शशि (2022) ने "माध्यमिक शिक्षकों की सृजनशीलता का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" किया और पाया कि शिक्षकों की सृजनशीलता का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य संतुष्टि में सार्थक सम्बन्ध है।

9. यादव, राजेश (2002) ने "सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिक्षमता एवं कार्य संतुष्टि का एक अध्ययन" किया और पाया कि माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिक्षमता एवं कार्य संतुष्टि में कोई सहसंबंध नही है।
10. वर्मा, पूजा (2021) ने "माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक संतुष्टि का उनके शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन" किया और पाया कि शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों का व्यक्तित्व व उनकी व्यावसायिक संतुष्टि अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाई गई जिसका उनके शिक्षण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षक की कार्य संतुष्टि पर शोध अध्ययन के निष्कर्ष से शिक्षा के क्षेत्र के लिए कई महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि और निहितार्थ का पता चलता है। अनुसंधान लगातार दिखाता है कि शिक्षक की नौकरी से संतुष्टि का छात्रों के परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संतुष्ट शिक्षक सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाने, छात्रों को शामिल करने और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करने की अधिक संभावना रखते हैं। अध्ययन विभिन्न कारकों पर प्रकाश डालता है जो शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करते हैं, जिनमें सहायक नेतृत्व, पर्याप्त संसाधन, प्रबंधनीय कार्यभार और व्यावसायिक विकास के अवसर शामिल हैं। इन कारकों पर ध्यान देने से कार्य संतुष्टि में सुधार हो सकता है। शिक्षक की नौकरी से संतुष्टि का समग्र कल्याण से गहरा संबंध है। असंतुष्ट शिक्षकों को थकान, तनाव और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अनुभव होने की अधिक संभावना है। एक स्वस्थ और प्रभावी शिक्षण कार्यबल बनाए रखने के लिए शिक्षक कल्याण को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। नीति निर्माताओं और शैक्षिक नेताओं को शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि में सुधार लाने के उद्देश्य से नीतियों और पहलों को डिजाइन करते समय इन निष्कर्षों को ध्यान में रखना चाहिए। व्यावसायिक विकास, परामर्श कार्यक्रमों और कार्यभार प्रबंधन में निवेश का सकारात्मक प्रभाव हो सकता है। हालांकि शिक्षक की नौकरी से संतुष्टि के बारे में बहुत कुछ सीखा जा चुका है, फिर भी विशिष्ट हस्तक्षेपों और रणनीतियों का पता लगाने के लिए आगे के शोध की गुंजाइश है जो संतुष्टि के स्तर को बढ़ा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, अनुसंधान छात्र परिणामों के साथ शिक्षक की नौकरी की संतुष्टि के अंतर्संबंध में गहराई से उतर सकता है।

निष्कर्षतः, शिक्षक की कार्य संतुष्टि एक सफल शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण घटक है। यह सीधे छात्रों के सीखने के अनुभवों, शिक्षक प्रतिधारण और समग्र शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करता है। कार्य संतुष्टि में योगदान देने वाले कारकों को समझना और इसे बेहतर बनाने के लिए रणनीतियों को लागू करना एक सहायक और प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है।

3. अध्ययन की सार्थकता

परिषदीय और मिशनरी विद्यालयों में काम कर रहे शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है। इस प्रकार के अध्ययन से हम शिक्षकों की तुलना करके उनकी संतुष्टि के कारणों और प्रभाव को समझ सकते हैं, जो विद्यालयीन शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप निम्नलिखित प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है :

कार्य संतुष्टि का स्तर: यह अध्ययन कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के स्तर की जाँच कर सकता है। यह प्रश्न होता है कि क्या उनकी संतुष्टि उनके कार्य से मेल खाती है और वे अपने पेशेवर कार्य में संतुष्ट हैं या नहीं।

कार्य की प्रवृत्तियाँ: इस अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि शिक्षक क्या प्रकार के काम कर रहे हैं, उनके पास कितना समय है, और उनके द्वारा विभिन्न कार्यों को कैसे प्राथमिकता दी जाती है।

शिक्षा प्रणाली: इस अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि परिषदीय और मिशनरी विद्यालयों में कौन-कौनसी शिक्षा प्रणालियों का उपयोग किया जा रहा है और क्या यह प्रणालियाँ शिक्षकों को उनकी कार्य संतुष्टि में मदद कर रही हैं।

शिक्षा प्रणाली में सुधार: यदि कोई शिक्षा प्रणाली कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित कर रही है, तो इस अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि कैसे वह प्रणाली में सुधार किया जा सकता है।

कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ: यह अध्ययन यह समझने में मदद कर सकता है कि कौन-कौनसी कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित कर रही हैं, और उनके द्वारा कैसे पार की जा सकती है।

उत्पादकता और शैली: यह अध्ययन कार्यरत शिक्षकों की शैली और उत्पादकता को भी मूल्यांकन कर सकता है। यह समझने में मदद कर सकता है कि कौन-कौनसे काम शिक्षकों के लिए सबसे अधिक उत्पादक हैं।

इस अध्ययन से प्राप्त की गई जानकारी शिक्षा प्रशासन और नीति निर्माण में मदद कर सकती है,

4. उद्देश्य

परिषदीय एवं मिशनरी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. परिकल्पना

परिषदीय एवं मिशनरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही हैं।

6. परिसीमांकन

1. प्रस्तुत अध्ययन में झाँसी जनपद के प्राथमिक परिषदीय एवं प्राथमिक मिशनरी विद्यालयों का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में झाँसी जनपद के 10 परिषदीय व 10 मिशनरी विद्यालयों से 30-30 शिक्षकों चयन किया गया है।

7. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

8. प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में झाँसी जनपद में स्थित प्राथमिक परिषदीय एवं मिशनरी विद्यालयों के 60 शिक्षकों का चयन याद्रच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया गया

9. प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक कार्य संतुष्टि को मापने के लिए डॉ. एस. के. सक्सेना द्वारा निर्मित अध्यापक कृत्य संतुष्ट मापनी का प्रयोग किया गया है।

10. परिणाम एवं विवेचन

मिशनरी एवं परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु कार्य संतुष्टि मापनी से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक-विचलन एवं मध्यमानों में अन्तर ज्ञात करने के लिए तथा शून्य परिकल्पनाओं की जांच हेतु टी-मान की गणना की गयी जिसके मानकों को निम्न तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है -

तालिका - 1 मिशनरी एवं परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के सांख्यिकीय मानों का परिदृश्य

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात	स्वतंत्राश	सार्थकता स्तर
मिशनरी विद्यालय के शिक्षक	30	27.43	1.41	2.75	58	.01 स्तर पर सार्थक
परिषदीय विद्यालय के शिक्षक	30	26.13	2.18			

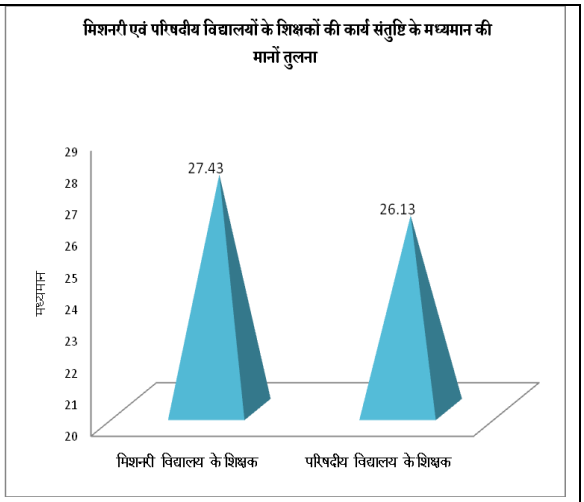

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मिशनरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 27.43 तथा मानक विचलन 1.41 है तथा परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 26.13 तथा मानक विचलन 2.18 है। मध्यमान मानों से स्पष्ट होता है कि परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का मध्यमान मिशनरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्यमान से कम है। वही मानक विचनल का निम्न मान समूह में निम्न विचलनशीलता अर्थात समूह में समजातीय को प्रदर्शित करता है। अतः मिशनरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक कार्य संतुष्ट हैं।

तालिका-1 में प्रदर्शित मिशनरी एवं परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये सांख्यिकीय दृष्टि से .01 स्तर पर सार्थक टी-मान (2.75) इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पना *"परिषदीय एवं मिशनरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नही है"* को अस्वीकृत करता है। अतः मिशनरी एवं परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अन्तर पाया जाता है। उक्त परिणामों की पुष्टि ग्राफ से भी होती है।

11. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत, शिक्षकों की पेशेवर जीवन में संतुष्टि के कारणों, प्रक्रिया, और प्रभाव को समझने का प्रयास किया गया है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में नीतियों और कार्रवाइयों को सुधारने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। इस अध्ययन के दौरान, शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के प्रमुख पहलुओं को विशेष रूप से मापा गया है, जैसे कि उनकी शिक्षण प्रक्रिया, विद्यालय में उपलब्ध संसाधन, शिक्षक-छात्र संबंध, और कार्य व्यवहार। अध्ययन के परिणामस्वरूप शैक्षिक प्रशासन और निर्माण नियमकों को शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को बढ़ावा देने और शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता में सुधार करने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन का मकसद शिक्षकों की सफ़लता और उनके पेशेवर विकास को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी नीतियों और उपायों की सुझाव देना है, ताकि वे अपने शिक्षा कार्य में बेहतर प्रदर्शन कर सकें और छात्रों को उनके भविष्य के लिए अधिक तैयार कर सकें। किसी भी अध्ययन को तब तक उपयोगी नहीं माना जा सकता जब तक कि वह शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उपयोगिता प्रस्तुत नही करता हो। प्रस्तुत अध्ययन में जो निष्कर्ष निकलकर आए है उनकी शैक्षिक उपयोगिता को शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय प्रशासन व भावी अनुसंधानकर्ताओं की द्रष्टि से स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से शिक्षकों को शिक्षण कार्य संपन्न करने के दौरान आने वाली शैक्षिक समस्याओं का समाधान कर शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार किया जा सकता है। अभिभावक अपने बालको हेतु अच्छे विद्यालय के साथ अच्छा शिक्षक भी चाहते है अपने कार्य के प्रति संतुष्ट शिक्षक होने से अभिभावक अपने बच्चों के प्रति चिंता मुक्त हो जाते है। विद्यालय प्रबंधन संशोधित वेतन, कल्याण हेतु वातावरण तथा शिक्षकों को अन्य सुविधा उपलब्ध कराकर शिक्षक को संतुष्ट रखने में महवपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके अलावा अध्ययन के माध्यम से भावी शोधार्थियों को शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विभिन्न आयामों के तहत अध्ययन कर व्यापक बिंदुओं को अपने अध्ययन में सम्मिलित कर शोध को औचत्यपूर्ण बनाने में सहायता मिलेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. वर्मा, नितिन कुमार (2010) "कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्त एवं अनुदान प्राप्त शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व उसके कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर http://hdl.handle.net/10603/277080

[2]. अशोक (2019). "पुलिस प्रशासन में महिला कार्मिकों की कार्य संतुष्टि" अप्रकाशित शोध प्रबंध. महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी http://hdl.handle.net/10603/326492

[3]. शाह, करुणा (1981) "प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की सामाजिक आर्थिक प्रष्ठभूमि एवं उनकी कार्य संतुष्टि" अप्रकाशित शोध प्रबंध. महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, http://hdl.handle.net/10603/324638

[4]. विष्णु दत्त, तृप्ति (2013) "प्राथमिक विद्यालय में पूर्व नियुक्त एवं नव नियुक्त शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार का अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध यूनिवर्सिटी http://hdl.handle.net/10603/253969

[5]. पाण्डेय,चंद्रेश (2001) "पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सामजिक आर्थिक स्थितियों का उनकी कार्य क्षमता एवं कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. वी.बी.एस.पूर्वांचल यूनिवर्सिटी http://hdl.handle.net/10603/180310

[6]. शर्मा, प्रतिमा (2020) "सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. आई.आई.एस.(डीम्ड टू वी यूनिवर्सिटी)

[7]. बाल, मौसमी (2013) "यू.पी. में नियुक्त विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन तथा उनकी कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध यूनिवर्सिटी http://hdl.handle.net/10603/238141

[8]. मिश्रा, शशि (2022) "माध्यमिक शिक्षकों की सृजनशीलता का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य संतुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. अवदेश प्रताप सिंह यूनिवर्सिटी http://hdl.handle.net/10603/396239

[9]. यादव, राजेश (2002) "सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिक्षमता एवं कार्य संतुष्टि का एक अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. वी.बी.एस.पूर्वांचल यूनिवर्सिटी http://hdl.handle.net/10603/182363

[10]. वर्मा, पूजा (2021) "माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक संतुष्टि का उनके शिक्षण पर प्रभाव का अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध. बरकातुल्लाह यूनिवर्सिटी http://hdl.handle.net/10603/480134